राजनीति का उदारवादी दृष्टिकोण

LIBERAL VIEW OF POLITICS

DATE: 18th April, 2020

DR. AKHILESH KUMAR SINGH
Dept. of Pol Sc.
K.S.M. COLLEGE, AURANGABAD (BIHAR)

डा० कमलेश्वर कुमार सिंह 18/04/20
राजनीति शास्त्र विभाग

राजनीति के उदारवादी दृष्टिकोण

उदारवाद वह जीवन दर्शन है जो मनुष्यों के हितों की रक्षा करता है। बौद्धिक जागरण के रूप में उदारवाद ने व्यक्ति की स्वतंत्रता को प्रोत्साहित किया और धर्म - सुधार आन्दोलन के समय में धार्मिक स्वतंत्रता का प्रचार एवं प्रसार किया था तथा वर्तमान समय में भी उदारवाद एक बहुत ही महत्वपूर्ण विचार-धारा के रूप में जाना जाता है। उदारवाद ने समाज को सुनिश्चित करने, राज्य में शांति सुव्यवस्था कायम करने तथा इसके अलावा बहुत सारे जनता के हित में उपयोगी कार्य करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, इस प्रकार हम राजनीति के उदारवादी दृष्टिकोणों को निम्नलिखित आधारों पर प्रस्तुत कर सकते हैं:-

(i) कल्याणकारी राज्य का समर्थक:- प्रारम्भ में उदारवादी राज्य को एक बुराई के रूप में देखते थे किन्तु वर्तमान समय में उदारवादी राज्य को जनकल्याण के साधन के रूप में स्वीकार किया तथा राज्य के आर्थिक क्षेत्र में व्यापक अधिकार सौंपे गये जिसके परिणाम स्वरूप समाज सुधार एवं जन कल्याण प्रभावित हुआ तथा अनेक पूँजीवादी देशों में भी राज्य ने जन कल्याण को ध्यान में रखते हुए पूँजी, निवेश पर अनेक अंकुश आरोपित किये तथा वर्तमान समय में भी ~~विकसित~~ विकसित देशों में राज्य व्यक्ति की

P.T.O

सामाजिक एवं आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति पर अधिक ध्यान देता है अपने देश के अर्थ व्यवस्था के साथ ही साथ लोक-स्वास्थ्य, शिक्षा एवं संस्कृति आदि सभी क्षेत्रों में राज्य का प्रभुत्व स्थापित होगा। और यह सच्चाई भी है कि वर्तमान युग में राज्य ने एक स्कूल शिक्षक, एक डॉक्टर, एक नर्स, व्यापारी, उत्पादक, बीमा अभिकर्ता, भवन-निर्माता आदि जैसे बहुत सारे कार्यों का भार अपने ऊपर आज ले लिया है।

(2) व्यक्तिगत और सामाजिक हितों में सामंजस्य — नवीन उदारवादी परम्पराओं के अनुसार व्यक्ति और समाज के हितों में सामंजस्य रहता है। आज के युग में व्यक्ति और समाज में अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है एक के बिना दूसरे की कल्पना नहीं की जा सकती है। इस सम्बन्ध में काइन का कहना है कि व्यक्ति और समाज का सिद्धांत एक पक्षीय नहीं है बल्कि एक-दूसरे के विकास के लिए दोनों ही अनिवार्य है।

(3) व्यक्ति उदारवाद का केन्द्र है :— व्यक्ति प्राचीन काल से ही उदारवादी दर्शन का केन्द्र बिन्दु रहा है इस सम्बन्ध में इतिहास साक्षी है कि जब कभी भी मनुष्य की स्वतंत्रता पर आघात पहुँचा है तो उदारवादियों ने व्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा की है और उसके स्वतंत्रता के अधिकारों को सुरक्षा प्रदान करने में अपना योगदान देता रहा है।

(4) उदारवाद और लोकतंत्र अपने अस्तित्व के लिए एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं :— इस सम्बन्ध में सर्वप्रथम मिल महोदय ने उदारवाद का आधार लोकतंत्र को माना था। मिल के बाद अनेक विद्वानों ने उदारवाद एवं लोकतंत्र को एक-दूसरे का प्रबल समर्थक बताया-

P.T.O.

है। अतः वास्तविकता यही है कि उदारवाद एवं लोकतंत्र अपने अस्तित्व के लिए एक-दूसरे पर निर्भर रहते हैं। 3

(5) समाज में सार्वजनिक हित के लिए आपस में प्रेम-भाव, लेन-देन को आवश्यक माना है। → सच पूछा जाय तो मनुष्य का पूर्ण विकास समाज में ही सम्भव हो सकता है क्योंकि मनुष्य समाज में ही अपने विभिन्न हितों एवं आवश्यकताओं की पूर्ति करता है तथा सभी व्यक्ति अपने-अपने हितों की पूर्ति में लगे रहते हैं। अतः एक-दूसरे के साथ प्रेम-भाव का होना बहुत ही जरूरी है। इस प्रकार हम देखते हैं कि जिस समाज में भेद-भाव लोगों में नहीं होता है तो उस समाज के व्यक्ति को अपनी प्रतिभा को विकसित करने का अवसर हमेशा प्राप्त होता रहता है। यह (प्रतिस्पर्धा) सामान्यतः आर्थिक, राजनीतिक एवं वैचारिक क्षेत्रों में ही देखने को मिलती है वर्तमान युग में उदारवादियों ने राज्य के लोक-कल्याणकारी स्वरूप को स्वीकार कर लिये हैं, तथा उदारवादी इस विचार से भी सहमत हैं कि केवल उन देशों में ही सर्वोत्तम शासन व्यवस्था स्थापित हो सकती है जहाँ शासन पर अधिकार करने के लिए राजनीतिक प्रतिस्पर्धा हो। और इस तरह की प्रतिस्पर्धा केवल लोकतंत्रीय शासन व्यवस्था में ही सम्भव है। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि समाज में सार्वजनिक हित के लिए प्रेम-भाव, मेलजोल आवश्यक है।

(6) राजनीति वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा शान्तिपूर्ण सामाजिक परिवर्तन सम्भव है। → ऐतिहासिक घटनाओं के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि उदारवाद का उदय आत्म विश्वास तथा धार्मिक

P.T.O

5/

कट्टरता के विरुद्ध विद्रोह के रूप में हुआ है उदारवाद ने हमेशा बुद्धिवादी एवं तर्कसंगत विचारों का समर्थन किया है। मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है इस बात को ध्यान में रखते हुए उदारवाद ने मानव हित से सम्बन्धित विचारों का समर्थन किया तथा मानव को पशु की तरह बन्धनों में बाँधने वाले विचारों का विरोध किया है परन्तु सामाजिक सुधारों को धीरे-धीरे लागू किया जाना चाहिए। उदारवादी का इस सबंन्ध में कहना है कि मानव-मस्तिष्क विवेकपूर्ण होनी चाहिए।

(7) संघर्ष एवं मतभेद ही परिपूर्ण समाज में राज्य एकता एवं राजनीतिक एकता उत्पन्न करता है → उदारवादियों का विचार है कि संघर्ष एवं मतभेद ही परिपूर्ण समाज में राज्य एकता और राजनीतिक एकता तथा सहमति उत्पन्न करने का प्रयास करते हैं। उदारवादियों का यह कहना है कि मानव समाज में राज्य एकता तथा सहमति उत्पन्न करने वाला यंत्र है जबकि राजनीति वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एकता तथा सहमति उत्पन्न होती है। अतः उदारवाद राज्य एवं राजनीति को संघर्ष रहित शान्तिपूर्ण समाज विकास का माध्यम मानते हैं।

आलोचकों ने राजनीति के उदार उदारवादी दृष्टिकोण की आलोचनाएँ जो निम्नलिखित आधार पर प्रस्तुत कि है।

(1) यह राजनीति संघर्ष को जन्म देती है — यह राजनीति वह प्रक्रिया है जो संघर्ष और असहमतियों को जन्म देती है उदारवादी राज्यों में शासितों के आर्थिक शोषण की व्यवस्था की गयी है राजनीति इसमें न्याय एवं व्यवस्था की स्थापना नहीं जाती है बल्कि सत्ताधारियों को समाज पर अपना प्रभुत्व बनाये रखने की शिक्षा देती है